

DH349

धर्मरत्न वज्राचार्य मुद्रा श्री महाविहार

चतुःशतिका

संस्कृत

महाभारत
अष्टादशस्कंध

ॐ नमो भूयः पुनः काना यय ॥ निर्याच्चन विधि ॥ सूत्रा नैव नै ददाव ॥
ॐ ददव ना जाय ॥ ध्यान इय ॥ गुण याय ॥ ॥ वाहिन वन ॥ खस
दवान य थाय स ॥ सेरु न नाउ स ॥ अमान स ॥ मरिच ॥ इमी स ॥ गो
अस ॥ न निदा स ॥ मधुय स ॥ धूमि स ॥ विहा वानि मनेव ॥ वाकाय
वाकाय मनेव ॥ ॥ सूर्य उदय वन स ॥ उभाय ॥ सनि वान स

॥ विहाय ॥ विहा वान ॥ कसाय गान ॥ दय मनेव ॥ भाउ स न ॥ ना
नम दा स्य ॥ मल मूक ॥ नाउ न ॥ ॥ लाहान सिय ॥ लेखन वा
न सिय ॥ दा ना ॥ लेखन सिय ॥ नाहान ॥ दुनि सिय ॥ कूध वान
लेख गान ॥ क्षण न ॥ अचि रुवा ॥ ॥ शान ॥ दन का ह ॥ रूय
लिह ॥ श्रूया ना मति ॥ ॥ वन व हा स ह ॥ वाकाय मनु ॥ उं डी ह

विशुद्ध ४ धर्मसर्वविकल्पानयनय चाम्पविष्णुधयहं ॥ मृथुयाज
॥ ॥ ज्ञानविधि ॥ उर्वेवडादकहं ॥ लेखसाधन ॥ विज्ञाभूनी
सूजान कृतिष्ठानयाय ॥ ॥ उर्वेवडादकहं ॥ समनरु ११
८१ माजोहं कृदि ११ कृटय ११ कृट ॥ मोठस लाहानन थि
सरे न कामरु ॥ ॥ खवनाहानसे लेखानसी ॥ धनया

य ॥ उर्वेवडादकहं कृट ॥ उर्वेवडादकहं कृट ॥ सर्वविद्य
नूकादयहं ॥ मसहाय ॥ मोठेमृय ॥ उर्वेवडादकहं कृट ॥
दि ॥ ज्ञान ॥ उर्वेवडादकहं कृट ॥ ३ ॥ नासिय ॥ यून ४ विद्युकातन
उर्वेवडादकहं कृट ॥ सर्वविद्यानूकादयहं कृट ॥ ॥ धनहं ना
हानमास ॥ दक्षिणरुले मृका नं ॥ सुयमेधुले ॥ वेत्ताज

रवे हँ ॥ वामरुक्मिणी ॥ वल्लभमण्डली ॥ लोमोयानां वं ॥
 धन ॥ श्रीगणेशाय ॥ ॐ नमो ॥ लोमोयानां वं
 ॥ ॥ धन ॥ धामायाम ॥ ॐ ८ खवन इकाय ॥ श्री २४ नं
 योनय ॥ ॐ १६ जवनविन ॥ ॥ श्रीआदि ॥ सूर्य ॥ ॐ
 धन ॥ नमो ॥ धन ॥ मानका ॥ धन ॥ धन ॥ धन ॥

॥ डंयमश्यमंगदयमविशुद्ध दिवंगतयिना सुखाव
 ली लाकथातु मनू गकं तुस्व वा ॥ ॐ नितेव्या विवि सनादि
 ॥ समन्त १७६ ग्रावा वेदिन क्षत्रभुमदाभा वषा मेव्या
 डिवाहोनया वडावा च्येयो डयकिठइ याग वाचाइना
 ॥ ५८ ॥ क्षसाकुत्रभुमदाभा वषा दिज्ञामयाकन साय मनव ॥

२५॥ नमो नमो वीज ॥ वं ॥ हृदय ॥ ॐ मणि मनी वली ॥ मणि मणि
समं हं हं कठ ताहा ॥ १ ॥ २॥ साहसु यम मनी निया वीज ॥ वं ॥ हृद
य ॥ ॐ श्री ॥ मणि साहसु यम मनी निया हं हं कठ ताहा ॥ २ ॥ ३॥ मणि
मणि नमो नमो वीज ॥ हं ॥ हृदय ॥ ॐ श्री ॥ मणि मणि नमो नमो
नमो नमो वीज ॥ ३ ॥ ४॥ मणि मणि वली वीज ॥ ४ ॥

॥ हृदय ॥ ॐ श्री ॥ मणि मणि वली ॥ ४ ॥ ५॥ मणि मणि वीज
वीज ॥ मं ॥ हृदय ॥ ॐ मणि मणि वीज ॥ विद्याना हं हं हं कठ कठ
ताहा ॥ ५ ॥ ६॥ मणि मणि वीज ॥ मं ॥ हृदय ॥ ॐ श्री
श्री ॥ मणि मणि वीज ॥ हृदय ॥ ॐ हं ॥ ७॥ मणि मणि वीज ॥ मणि
वीज ॥ मणि मणि वीज ॥ मणि मणि वीज ॥ मणि मणि वीज ॥ मणि मणि वीज ॥

॥ पुस्तकानुसंग ॥ १ ॥ एक नूतन लाया वीर जी हृदय
 है कनूत न जी ॥ है कठुला ला ॥ २ ॥ है जी ॥ है कनूत न जी
 है कनूत न जी ॥ है कठुला ला ॥ ३ ॥ है कनूत न जी
 वीर जी है हृदय है वडी कठ ॥ ४ ॥ है कनूत न जी
 है कनूत न जी है कठुला ला ॥ ५ ॥ है कनूत न जी

१ वज्रमालाया ॥ गौ ॥ हृदय ॥ ॐ नानेष्टु स्ता ननु नस्ता हा ॥ ६ ॥ १ मा
 निनीया ॥ वीज ॥ मां ॥ हृदय ॥ ॐ मा नीये स्ता हा ॥ ७ ॥ २ आगा
 गाम्बनया ॥ विज ॥ हूं ॥ हृदय ॥ ॐ हूं रुः स्ता हा ॥ ८ ॥ वसूधा
 नाया ॥ वीज ॥ वूं ॥ ॐ वूं वसूधा नस्ता हा ॥ ९ ॥ ३ मन्त्र ॥ भव
 को नमो नमो व ॥ जय किठ शन ॥ उरु या य मान शनो ॥ ३ ॥

धर्मरत्न देवाचार्य सुरत श्री महाविहार

DH 349